डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

बृजमोहन अग्रवाल
मंत्री, संस्कृति, धर्मस्व एवं पर्यटन

विकास के दस वर्ष
वर्ष 2001 से 2010

दस वर्षों का सांस्कृतिक वैभव

राज्योत्सव-10

विकास का दशक

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री

Dr. RAMAN SINGH
CHIEF MINISTER

मंत्रालय
रायपुर, छत्तीसगढ़

MANTRALAYA
RAIPUR, CHHATTISGARH
Ph. : (O) - 0771-2221000-01
Fax - 0771-2221306
Ph. : (R) - 0771-2331000-01

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के दस वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर संस्कृति विभाग द्वारा एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें विगत वर्षों में विभाग द्वारा राज्य की विविधतापूर्ण संस्कृति एवं अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किए गए प्रयासों का समावेश होगा।

राज्य में एक ओर जहां लोक जीवन में रची–बसी जीवंत संस्कृति तथा लोकरंगों को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए बहुआयामी प्रयास किए गए हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे संभावनाशील स्थानों पर उत्खनन भी किए गए हैं, जिनसे छत्तीसगढ़ के पुरावैभव के अवशेषों के बारे में जानकारियां हासिल की जा सकें।

संस्कृति विभाग का यह प्रयास प्रदेश की सामाजिक समरसता तथा भाईचारे को बढ़ाते हुए सांस्कृतिक उत्कर्ष के नए आयामों की ओर ले जाने में सफल होगा।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

(डॉ. रमन सिंह)

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

बृजमोहन अग्रवाल

मंत्री

लोक निर्माण विभाग, स्कूल शिक्षा, संसदीय कार्य, पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवंधर्मस्व, छत्तीसगढ़

फोन (मंत्रालय)	:	0771-4080226, 2221226
फैक्स नं.	:	0771-2236212
निवास	:	बी-5/1, शंकर नगर, रायपुर
फोन	:	0771-2331070, 2331011
निवास	:	रामसागरपारा, रायपुर (छ.ग.)
फोन	:	0771-2292300, 2293000
ई-मेल	:	bm.raipur@gmail.com, agrawal_brijmohan@yahoo.co.in
वेबसाइट	:	www..brijmohancg.com

संदेश

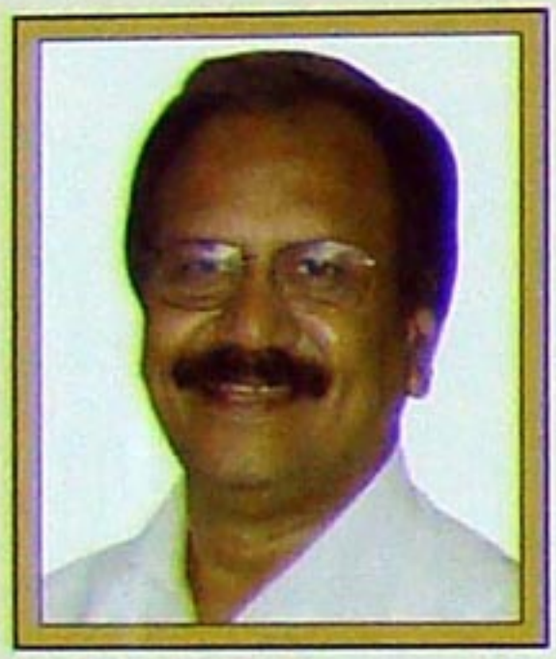

अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण को दस वर्ष पूरा हो गया है और प्रदेश, अपनी विकास यात्रा के क्रम में प्रगति के पथ पर निरंतर विकसित होते हुए ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। इसकी निरंतरता निर्बाध बनी रहेगी। राज्य की जनता को सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं से लाभ प्रदान किया गया है, जिससे उनके जीवन स्तर में नया परिवर्तन आया है, फिर भी इस दिशा में अभी बहुत से और भी कार्य किए जाने हैं।

इस विकास यात्रा में संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा भी राज्य के कलाकारों के लिए जनकल्याणकारी योजना के तहत स्वास्थ्यगत लाभ एवं पेंशन स्वरूप सहायता राशि प्रदान किया जा रहा है। राज्य के कला साधकों की कला एवं संस्कृति को देश और सात समुंदर पार प्रचारित करने की योजनाओं को भी शामिल किया गया है। पुरातत्व के क्षेत्र में सिरपुर, पचराही, महेशपुर आदि स्थानों में उत्खनन से प्राप्त अवशेषों को भारतीय कला जगत के भंडार स्वरूप सुरक्षित रखा जा रहा है एवं सिरपुर को विश्व धरोहर के लिए शासन प्रयासरत हैं। संस्कृति और पुरातत्व से संबंधित नवीन अनुसंधान और शोध के क्षेत्र में राज्य की छवि को और उभारा जा रहा है । आदिवासी कला और संस्कृति को प्रोत्साहित कर उसे देश भर में प्रसारित करने में विभाग की अहम भूमिका है।

राज्य की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की उपलब्धियों एवं योजनाओं पर केन्द्रित और इन योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से यह पुस्तिका प्रकाशित की गई है। मुझे विश्वास है कि, यह पुस्तिका आम–लोगों को जानकारी पहुंचाने में सार्थक साबित होगी।

(बृजमोहन अग्रवाल)

विभाग के उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं-मान्यताओं का समावेश एवं उनके सवंर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर बल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य, समुदायों के पारस्परिक संबन्धों को बनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संबन्धों की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा एवं राज्य की अन्य बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं राज्य के विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतरसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा, जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा। प्रदेश की आदिम संस्कृति के संरक्षकों और कलाकारों को दूरस्थ अंचलों से चिन्हांकित करने के परिणाममूलक प्रयास किए जाएंगे।

स्मारकों का संरक्षण हमारी संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक- सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतरसंबन्धो को नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध-संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से कराना विभाग का ध्येय है।

महंत घासीदास संग्रहालय, रायपुर

क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है-

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश विदेश में उसका प्रचार-प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्यों में हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी राजभाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी के साथ-साथ राजभाषा के प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।

जन कल्याणकारी योजनाएँ

(1) अर्थाभावग्रस्त लेखकों, कलाकारों एवं उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता योजना :-

अर्थाभावग्रस्त लेखकों/कलाकारों अथवा उनके आश्रितों को जो परिवार को असहाय छोड़ गये है, मासिक वित्तीय सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से योजना संचालित है जिसके अंतर्गत प्रत्येक हितग्राही को 1500/- रूपये प्रतिमाह संबंधित जिला पंचायतों के माध्यम से प्रदान किया जाता है। इसके लिए पात्रता हेतु लेखकों/कलाकारों की आयु 60 वर्ष अथवा उससे अधिक हो तथा परिवार की मासिक आय अधिकतम 2000/- रूपये से अधिक न हो। आवेदन संबंधित जिले के कलेक्टर के माध्यम से प्रेषित किये जाते हैं। तद्नुसार प्राप्त आवेदन पत्रों पर शासन द्वारा गठित कार्यवाही समिति द्वारा विचारोपरान्त अनुशंसाएं शासन को भेजी जाती है। विगत दस वर्षों के वर्षवार आंकड़े निम्नानुसार हैं -

वर्ष	कलाकारों/साहित्यकार की संख्या	दी गई पेंशन राशि
2000-01	20	1,65,200/-
2001-02	13	1,09,200/-
2002-03	21	1,76,400/-
2003-04	25	2,10,000/-
2004-05	24	2,01,600/-
2005-06	28	2,35,200/-
2006-07	38	3,19,200/-
2007- 08	63	9,32,400/-
2008-09	60	10,42,500/-
2009-10	58	10,44,000/-
2010-11	50	9,00,000/-

(2) छत्तीसगढ़ कलाकार कल्याण कोष से सहायता योजना :-

राज्य के लेखकों/साहित्यकारों/कलाकारों अथवा उनके परिवार के सदस्यों की लम्बी तथा गंभीर बिमारी, दुर्घटना, मृत्यु अथवा दैवीय विपत्ति की स्थिति में आर्थिक सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से उक्त योजनान्तर्गत 15000/- रूपये तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इसके लिए पात्रता की शर्तों के अनुसार आवेदक राज्य का मूल निवासी हो तथा वह शासकीय अथवा अर्द्धशासकीय कर्मचारी न हो। इसके लिए आवेदन पत्र सीधे संस्कृति विभाग अथवा संचालनालय को प्रेषित किए जा सकते हैं। उक्त योजनान्तर्गत हितग्राहियों को दी गई कुल सहायता राशि की वर्षवार जानकारी निम्नलिखित हैं :-

वर्ष	कुल संख्या	दी गई कुल सहायता राशि
2001-02	-	-
2002-03	10	50,000/-
2003-04	07	35,000/-
2004-05	01	5,000/-
2005-06	17	85,000/-
2006-07	24	1,20,500/-
2007-08	34	5,10,000/-
2008-09	16	2,40,000/-
2009-10	45	6,75,000/-
2010-11	15	2,25,000/-

(3) अशासकीय संस्थाओं को अनुदान -

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग द्वारा ऐसी पंजीकृत अशासकीय संस्थाओं को जो कम से कम तीन वर्षो से प्रदेश की संस्कृति/लोक कला/भाषा/साहित्य/बोलियों के विकास, संरक्षण एवं प्रवर्धन के लिए प्रयासरत हैं तथा जो उत्कृष्ट स्तर के आयोजनों के लिए शासकीय अनुदान प्राप्त करना चाहते हैं, नियमानुसार सहायता अनुदान प्रदान किए जाने का प्रावधान है। ऐसी संस्थाओं को दी गई अनुदान राशि की वर्षवार जानकारी निम्नलिखित है :-

वर्ष	कुल संख्या	दी गई अनुदान राशि
2000-01	-	-
2001-02	45	8,85,000/-
2002-03	154	19,78,500/-
2003-04	124	25,11,000/-
2004-05	82	19,88,000/-
2005-06	82	22,21,338
2006-07	141	44,80,500/-
2007- 08	126	52,61,800/-
2008-09	186	70,14,421/-
2009-10	117	78,76,882/-

इसके अतिरिक्त विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक आयोजनों/महोत्सवों/मेलों हेतु कलेक्टरों को आबंटित राशि की वर्षवार जानकारी निम्नलिखित है -

वर्ष	कुल संख्या	दी गई अनुदान राशि
2001-02	02	2,52,541/-
2002-03	14	16,67,000/-
2003-04	12	23,25,000/-
2004-05	13	30,36,000/-
2005-06	14	28,25,000/-
2006-07	09	18,89,000/-
2007-08	11	25,06,000/-
2008-09	15	25,91,000/-
2009-10	18	69,86,505/-

महत्वपूर्ण उपलब्धियां

1. विभागान्तर्गत पांच राज्यस्तरीय सम्मान/पुरस्कार स्थापित किए गए हैं जो निम्नलिखित है

(1) पं.सुन्दरलाल शर्मा सम्मान (साहित्य/आंचलिक साहित्य) - अब तक 09 व्यक्ति इस अलंकरण से सम्मानित किए गए हैं -

वर्ष	सम्मान ग्रहिता का नाम	रिमार्क
2001-02	श्री विनोद कुमार शुक्ल	
2002-03	श्री कृष्ण बलदेव वैद	
2003-04	-	आचारसंहिता
2004-05	श्री लाला जगदलपुरी श्री श्यामलाल चतुर्वेदी	
2005-06	डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा श्री बवन प्रसाद मिश्र	
2006-07	श्री दानेश्वर शर्मा।	
2007-08	डॉ.रमेशचंद्र महरोत्रा, बिलासपुर	
2008-09	-	आचारसंहिता
2009-10	डॉ. कुंतल गोयल, अंबिकापुर	

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ

(2) चक्रधर सम्मान (कला एवं संगीत) - अब तक 08 व्यक्ति इस अलंकरण से सम्मानित किए गए हैं -

वर्ष	सम्मान ग्रहिता का नाम	रिमार्क
2001-02	सुश्री किशोरी अमोनकर	
2002-03	श्री हबीब तनवीर	
2003-04	-	आचारसंहिता
2004-05	डॉ. पी.डी. आशीर्वादम् पं. बिमलेन्द्र मुखर्जी	
2005-06	श्री तुलसी राम देवांगन श्री गुणवंत व्यास	
2006-07	पं.रामलाल।	
2007-08	श्रीमती कमल मनोहर केलकर	
2008-09	-	आचारसंहिता
2009-10	-	आचारसंहिता

(3) दाऊ मंदराजी सम्मान (लोक कला/शिल्प) - अब तक 09 व्यक्ति इस अलंकरण से सम्मानित किए गए हैं-

वर्ष	सम्मान ग्रहिता का नाम	रिमार्क
2001-02	श्री झाडू राम देवांगन	
2002-03	श्री मदन निषाद श्री दादूसिंह रासधारी	
2003-04	-	आचारसंहिता
2004-05	श्री भुलवाराम यादव श्रीमती सोनाबाई	
2005-06	सुश्री तीजन बाई श्री गोविंदराम झारा	
2006-07	श्री गोविंद राम निर्मलकर	
2007-08	श्री कोदूराम वर्मा भिंभौरी	
2008-09	-	आचारसंहिता
2009-10	श्री रामचरण निर्मलकर	

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

(4) छत्तीसगढ़ अप्रवासी भारतीय सम्मान (देश के बाहर उल्लेखनीय कार्य) - सम्मान की स्थापना वर्ष 2005-06 में की गई। अब तक 03 व्यक्ति इस अलंकरण से सम्मानित किए गए हैं -

वर्ष	सम्मान ग्रहिता का नाम	रिमार्क
2005-06	श्री चंद्रकांत पटेल	
2006-07	श्री देवेन्द्र नारायण शुक्ल	
2007-08	श्री वेंकटेश शुक्ला	
2008-09	-	आचारसंहिता
2009-10	-	

(5) स्व. देवदास बंजारे स्मृति पुरस्कार (प्रदर्शनकारी लोक कला) - पुरस्कार की स्थापना वर्ष 2006-07 में की गई। अब तक 02 व्यक्ति/ संस्था को इस पुरस्कार से नवाजा गया है-

वर्ष	सम्मान ग्रहिता का नाम	
2006-07	श्रीमती सुरूज बाई खाण्डे	
2007-08	डॉ. आर. एस. बारले	
2008-09	-	आचारसंहिता
2009-10	-	

उक्त सम्मान/पुरस्कार राज्य शासन द्वारा राज्य के महान सपूतों की चिर स्मृति में स्थापित है तथा प्रतिवर्ष संबंधित क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धी एवं विशिष्ठ योगदान को प्रोत्साहित करने एवं मान्यता देने के उद्देश्य से प्रदान किये जाते हैं।

2. छत्तीसगढ़ी को राजभाषा का दर्जा दिया गया तथा छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग का गठन - छत्तीसगढ़ी को राज्य की राजभाषा का दर्जा प्रदान कर छत्तीसगढ़ी के प्रचलन, विकास एवं राजकीय कार्यों में उपयोग हेतु समस्त उपाय करने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा "छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग" की स्थापना की गई है, जो राज्य की प्रमुख उपलब्धियों में सम्मिलित है। छत्तीसगढ़ के 15 वरिष्ठ साहित्यकारों को उनकी छत्तीसगढ़ी साहित्य के प्रति सेवा हेतु "छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग सम्मान 2009" से सम्मानित किया गया है। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय में पी.जी. डिप्लोमा इन फंक्शनल छत्तीसगढ़ी का पाठ्यक्रम प्रारंभ कराया गया है। छत्तीसगढ़ी और सरगुजिया के बीच अंतर संबंध विषय पर अंबिकापुर में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसी प्रकार 'माई कोठी' योजना के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़ी में लिखे साहित्य का संकलन किया जा रहा है।

3. विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना - स्वामी विवेकानन्द जी ने कोलकाता के पश्चात् अपने जीवन का सर्वाधिक समय रायपुर में व्यतीत किया। उनके जीवन काल को स्मरणीय बनाने हेतु शासन द्वारा विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना की गई है, जिसके अन्तर्गत स्वामी जी के विचारों के अनुकूल अंतरराष्ट्रीय संबंध, भारत दर्शन, प्रबंधशास्त्र, युवा कल्याण एवं ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर अध्ययन एवं शोध कार्य संचालित किए जायेंगे। इस दिशा में कार्यवाही की जा रही है।

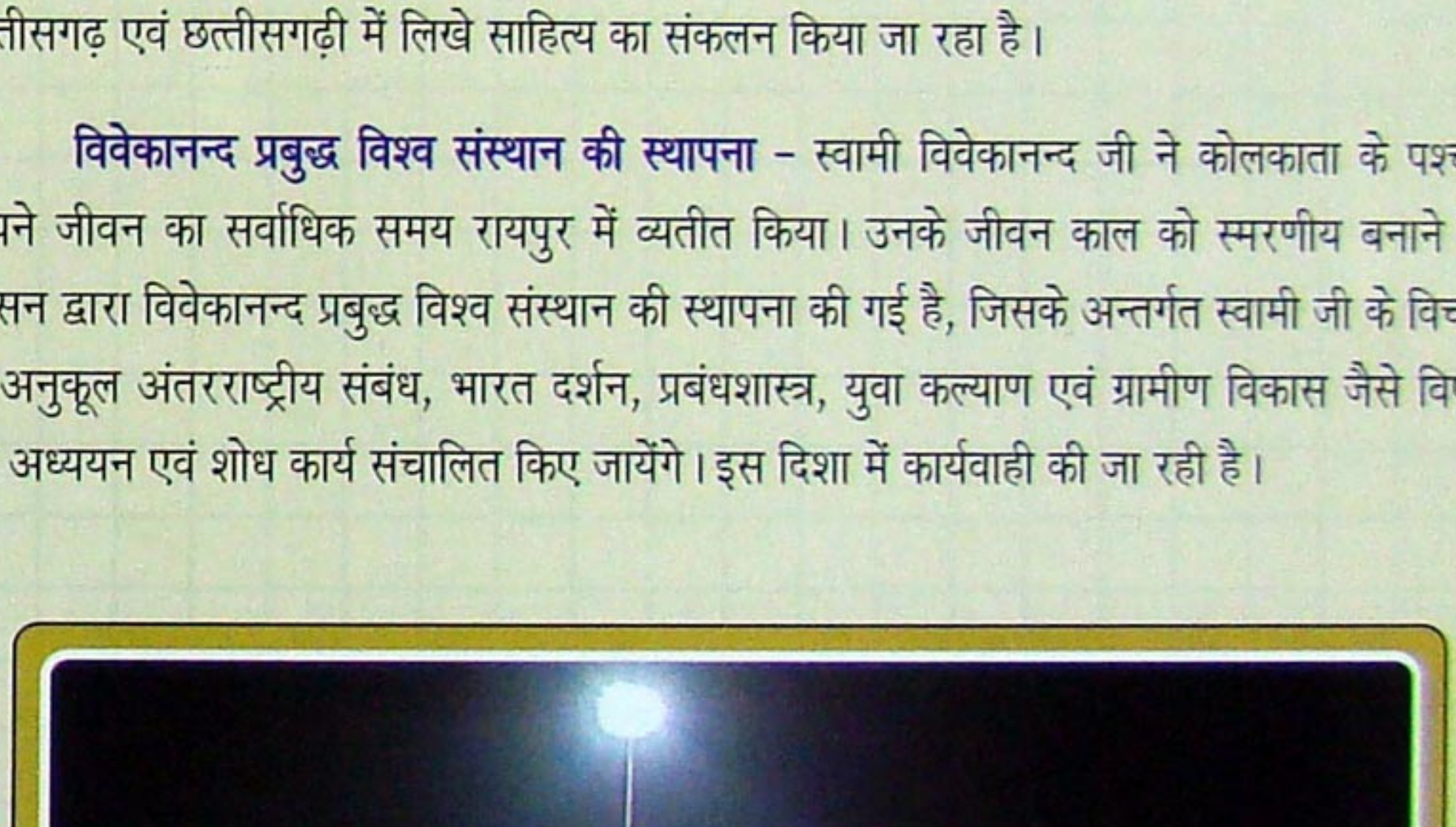

विवेकानंद सरोवर, रायपुर

4. छत्तीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान का गठन - छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग द्वारा संचालित छत्तीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान द्वारा अब तक लगभग 35 गतिविधियों/कार्यक्रमों का आयोजन किया जा चुका है। संस्थान द्वारा बच्चों को सिन्धी भाषा की शिक्षा देने हेतु रायपुर के विभिन्न सिन्धी बाहुल्य क्षेत्रों में तीन केन्द्र, वहां की पूज्य सिन्धी पंचायतों के सहयोग से संचालित हैं। संस्थान द्वारा सिन्धी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान हेतु विभिन्न क्रियाकलाप समय-समय पर शासन के सहयोग से संचालित किए जाते रहे हैं।

5. छत्तीसगढ़ बहुआयामी सांस्कृतिक संस्थान - राज्य के विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार-प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान के विकास हेतु छत्तीसगढ़ बहुआयामी सांस्कृतिक संस्थान के गठन का निर्णय लिया गया है। इस संस्थान में ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों, कलाकारों की एक अंतःसंकायी समिति होगी। साथ ही विविध कलाओं एवं संकायों से चयनित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ इसमें सम्मिलित होंगे। यह केन्द्र समुदायों के विशिष्ट सांस्कृतिक क्रियाकलापों को सर्वत्र प्रोत्साहित करेगा। इस योजना को साकार करने के उद्देश्य से ऑडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार किया जाना है। ''बहुआयामी संस्कृतिक संस्थान'' के निर्माण हेतु राजधानी के मध्य पंडरी में 4.8 एकड़ भूमि उपलब्ध हो चुकी है। इस सांस्कृतिक परिसर के निर्माण हेतु देश भर के अनुभवी वास्तुविदों से प्राप्त प्रस्तावों के माध्यम से इसकी अवधारणा तथा स्वरूप पर निर्णय लिया गया है तथा तद्नुसार शीघ्र कार्य प्रारंभ किया जावेगा।

मुक्ताकाशी मंच, रायपुर

अन्य उपलब्धियां

(1) **लोकोत्सव व पारंपरिक मेलों का विकास** - राज्य के त्रिवेणी संगम राजिम जहां प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को पारंपरिक रूप से मेले का आयोजन होता था, उसे नियमित स्वरूप प्रदान करते हुए राजिम कुंभ मेला नाम से स्थायित्व प्रदान किया गया है। इसी तरह राज्य के अन्य क्षेत्रों जैसे बस्तर दशहरा, शिवरीनारायण उत्सव, रायगढ़ में चक्रधर समारोह, सरगुजा में रामगढ़ उत्सव, बिलासपुर में बिलासा उत्सव, जांजगीर में जाज्वल्यदेव महोत्सव, सिरपुर में सिरपुर उत्सव, कांकेर में गढ़िया महोत्सव, करिया धुरवा मेला, रतनपुर उत्सव, मल्हार महोत्सव, खल्लारी महोत्सव, लोक मड़ाई, डोंगरगढ़, भोरमदेव महोत्सव, ताला उत्सव आदि के आयोजन जिला प्रशासन के माध्यम से समन्वय कर संचालित किये जाते हैं।

(2) **राज्योत्सव का आयोजन** - राज्य स्थापना दिवस 01 नवम्बर के अवसर पर राज्य अंलकरण समारोह के नियोजन के साथ ही साथ राज्य के विभिन्न अंचल के स्थापित लोक कलाकारों, कला दलों तथा नवोदित और अल्पज्ञात कलाकारों को भी प्रस्तुति हेतु अवसर उपलब्ध कराया गया है। जिसमें राष्ट्रीय प्रोत्साहन एवं रचनात्मक स्वरूप की झलक प्रस्तुत हुई है।

राज्योत्सव आयोजन

(3) कला, साहित्य एवं संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन - प्रदेश की संस्कृति, कला एवं साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबन्धों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन-सहन, जीवन शैली, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किए गए हैं। इस हेतु विभागीय क्रियाकलापों के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और कला क्षेत्र में कार्यरत स्वायप्रशासी एवं निजी क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। कलाकारों की पहचान एवं उन्हें यथोचित मंच प्रदान करने के उद्देश्य से चिन्हारी योजना भी प्रारम्भ की गई है। सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के विकास एवं संवर्धन की दिशा में हो रहे कार्यो को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभागान्तर्गत छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, स्वामी विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ एवं छत्तीसगढ़ सिंधी साहित्य संस्थान का गठन किया गया है।

(4) लोक शिल्पियों की कार्यशाला सह प्रशिक्षण - प्रतिवर्ष आकार प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत मृदा शिल्प, ढोकरा शिल्प, मधुबनी चित्रकला, फड़ चित्रकला, काष्ठ शिल्प, भित्ती चित्रकला के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिल्प गुरूओं द्वारा बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया है। इन शिवरों में शास्त्रीय नृत्यों का प्रशिक्षण भी दिया गया है।

कला प्रशिक्षण शिविर

(5) **पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ** - छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की पावन स्मृति में साहित्यिक संस्था सृजनपीठ कार्यरत है। इस संस्थान ने अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों से अब पूरे देशभर के साहित्यकारों में अपनी पहचान और सम्मान जनक स्थान बना लिया है। 27 मई 2009 को बख्शी जी की जयंती के अवसर पर एक दिवसीय राज्यस्तरीय साहित्यकार सम्मेलन भिलाई में आयोजित किया गया। 16 अगस्त 2009 को डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय की ''अज्जु'' कहानी पर, 28 नवम्बर, 2009 को स्व. कवि श्री इन्द्र बहादुर खरे की कृति ''गीत'' पर एवं 30 जनवरी, 2010 को श्रीमती पदमा जोशी की कृति ''अगले मोड'' पर परिचर्चा गोष्ठी आयोजित की गई।

(6) **दक्षिण-मध्य-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की सदस्यता** - विभाग द्वारा पड़ोसी राज्य से सांस्कृतिक संबंध विकसित करने एवं राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2005 से दक्षिण-मध्य-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर की सदस्यता ग्रहण कर नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इसी प्रकार संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, अभिलेखन, कार्यशाला का आयोजन किया गया है।

विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियां - द.म.क्षे. के सौजन्य से

7. चिन्हारी कार्यक्रम :- विभाग की एक महती योजना 'चिन्हारी' कार्यक्रम के द्वारा गांव/कस्बों में छिपे प्रतिभाओं को राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने/आगे लाने के लिए प्रारंभ की जा रही योजना है। इस कार्यक्रम के तहत विभाग द्वारा पंचायत स्तर/विकासखण्ड स्तर/जिला स्तर/प्रदेश स्तर पर छिपी प्रतिभाओं का पंजीयन कर इन्हें मंच उपलब्ध कराकर इन कलाकारों को राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाना है जिससे राज्य का गौरव बढ़े।

8. राजिम कुंभ :- राज्य के त्रिवेणी संगम राजिम जहाँ प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को पारंपरिक रूप से मेले का आयोजन होता था, उसे नियमित स्वरूप प्रदान कर राजिम कुंभ मेला समिति गठित किया गया है। राज्य के संस्कृति के विकास एवं पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु राजिम में शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, मठाधीश, संत-महात्माओं एवं जन प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश के कोने-कोने से साधु-संतों का समागम राजिम में होता है। छत्तीसगढ़ का प्रयाग राज में इस आयोजन से संस्कृति, धरोहर, लोक परंपरा एवं कला को एक नया आयाम जुड़ा है। इस दौरान राष्ट्रीय स्तर व आंचलिक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और साहित्यिक संगोष्ठी एवं विभागीय प्रदर्शनीय का आयोजन पूरे पंचकोशी क्षेत्र में किया जाता है।

राजिम कुम्भ - स्नान पर्व

9. पुरखौती मुक्तांगन संग्रहालय :- राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव-सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने हेतु पुरखौती मुक्तांगन का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के द्वारा इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आकार प्रदान करने का संकल्प जीवन्त हुआ। पुरखौती मुक्तांगन रायपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम-उपरवारा में लगभग 200 एकड़ भूमि पर आकार ग्रहण कर रहा है।

महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा पुरखौती मुक्तांगन के प्रथम चरण का लोकार्पण किया गया, लोकार्पण समारोह में महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने निर्माणाधीन इस योजना की सराहना की। राज्य की इस महत्वाकांक्षी परियोजना के परिसर में माननीय मुख्यमंत्रीजी के हाथों पारंपरिक पौधों का रोपण कर शिल्प ग्राम निर्माण का संकल्प लिया गया। इस योजना के निर्माण कार्य हेतु ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर एवं वन विभाग को क्रियान्वयन एजेन्सी के रूप में दायित्व सौंपा गया है।

लगभग 200 एकड़ परिक्षेत्र में फैला पुरखौती मुक्तांगन शैक्षणिक केन्द्र होगा जिसमें छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति, कलाशिल्प, प्राकृतिक संरचना और भौगोलिक परिदृश्य, पर्यावरण और जैव विविधता को प्रदर्शित करने हेतु विकास कार्य संपन्न कराया जाना है जिसका लोकार्पण महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा किया गया। महामहिम द्वारा पुरखौती मुक्तांगन की इस अवधारणा की सराहना की गई है।

प्रथम चरण के विकास कार्य में भव्य प्रवेश द्वार, पर्यटन सूचना केन्द्र, पाथ-वे, माड़ियापथ, बैगा चौक, देवगुड़ी, छत्तीसगढ़ हाट, आभूषण पार्क, छत्तीस खम्भा चौक, जलपृष्ठीय रंगमंच, जनजातीय पारंपरिक शेड, मनोरंजक उद्यानगृह, सड़क एवं जल-निकास, लौह शिल्पियों की कार्यशाला एवं भित्तिचित्र निर्माण, सरगुजा की भित्तिचित्र का पारंपरिक जाली निर्माण, स्वतंत्रता सेनानियों की मूर्तियों का निर्माण, चारदीवारी निर्माण, छत्तीसगढ़ का मानचित्र का निर्माण जिसमें छत्तीसगढ़ के विभूतियों को दिखाया गया है। भू-दृश्य सौंदर्यीकरण एवं विद्युत साज-सज्जा आदि कार्य संपन्न किये जा चुके हैं।

पुरखौती मुक्तांगन, रायपुर

आयोजन एवं उत्सव

राज्य, नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है ताकि राज्य की पारंपरिक संस्कृति अविच्छिन्न बनी रहे और समाज-संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इस तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया :-

- गौतम बुद्ध के जीवनवृत्त पर आधारित महानाट्य 'तथागत' सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- महाकवि कालिदास की अमर कृति 'मेघदूत' की प्रस्तुति।
- शास्त्रीय रागों पर आधारित 'पावस-प्रसंग' का आयोजन, साईंस कालेज सभागार, रायपुर में भक्तिपूर्ण गीतों का सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- 'वो जब याद आए' स्व. मोहम्मद रफी की स्मृति पर संगीतमय आयोजन।
- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'जश्न ए आजादी' कार्यक्रम का आयोजन।
- तबला चौपाल 'नाद-निनाद' का आयोजन।
- शास्त्रीय संगीत के युवा कलाकारों की प्रस्तुति 'साधना महोत्सव' तथा पांच दिवसीय नाट्य समारोह 'रंगोत्सव' का आयोजन। (दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर)।

विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

- अन्य राज्यों में राज्य के कलाकारों की प्रस्तुति के क्रम में उड़ीसा दशहरा पूजा, कुल्लु दशहरा, हिमाचल प्रदेश, लोकरंग उत्सव, जयपुर।
- कास्मो, ट्रेड एण्ड विल्ड फेयर में सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- बिलासपुर स्वदेशी मेला में कार्यक्रम।
- वोट फार ताज का आयोजन।
- वन्दे मातरम की वर्षगांठ का आयोजन।
- राज्योत्सव का आयोजन।
- अन्य राज्यों के कलाकारों की लोक प्रस्तुति। (दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर)।
- राज्य दिवस, नई दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।
- सफर मुक्ताकाश का आयोजन - राज्य की मंचीय प्रतिभाओं तथा चित्रकारों को नियमित अवसर प्रदान कर राजधानी में सुधि नागरिकों की रूचि और आग्रह के अनुरूप प्रत्येक माह के दूसरे तथा चौथे शनिवार को आयोजित 'सफर मुक्ताकाश' के अंतर्गत अप्रैल-2009 से अब तक नाटकों तथा लोक गायकों का गायन प्रस्तुत कराया गया है।
- लोक शिल्पियों की कार्यशाला सह प्रशिक्षण :- आकार एवं शिल्प मड़ई का आयोजन किया जाता है।
- छत्तीसगढ़ लॉफ्टर शो का आयोजन।
- स्वर संस्कृति कार्यशाला।

वोट फॉर ताज आयोजन रैली

- शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम 'राग' का आयोजन।
- बसंत तिमोथी की याद में म्यूजिकल कलरफूल प्रोग्राम का आयोजन।
- श्रम दिवस पर आयोजित कार्यक्रम।
- लोकरंग का आयोजन।
- बाल फिल्म समारोह का आयोजन।
- स्वतंत्रता की 150 वीं वर्षगांठ पर आयोजन।
- विवेकानन्द प्रबुद्ध संस्थान का उद्घाटन समारोह।
- छत्तीसगढ़ी फिल्म स्टार नाईट।
- व्यापार मेला में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- कत्थक समूह नृत्य का आयोजन।
- ए.आर.रहमान म्यूजिकल शो का आयोजन।
- मुक्तांगन महोत्सव का आयोजन।
- नाचा-गम्मत कार्यशाला।
- साधना महोत्सव का आयोजन।
- मोहम्मद रफी की याद में 'मो.रफी नजाकत'।
- पावस-प्रसंग का आयोजन।
- स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित 'सलाम-ए-वतन' कार्यक्रम।
- नगमा-ए-मुकेश पर आधारित कार्यशाला।
- पारंगत महोत्सव का आयोजन।

वन्दे मातरम् शताब्दी समारोह - सांस्कृतिक आयोजन

संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी

अंतःसंकायी संवाद तथा स्थानीय समुदायों के सह-निर्देशित पहल से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से निम्नानुसार आयोजन किए गए -

- विश्व धरोहर दिवस।
- उत्खनन स्थल पचराही, जिला कर्वधा में राष्ट्रीय स्तर शोध संगोष्ठी का आयोजन।
- उत्खनन स्थल सिरपुर, जिला महासमुंद में राष्ट्रीय स्तर शोध संगोष्ठी का आयोजन।
- उत्खनन स्थल धमतरी, जिला धमतरी में राज्य स्तरीय शोध संगोष्ठी का आयोजन।
- शहीद राजगुरू पर संगोष्ठी का आयोजन।
- शहीद वीरनारायण सिंह पर संगोष्ठी का आयोजन।
- स्वामी विवेकानंद पर केन्द्रित संगोष्ठी का आयोजन।

इसी प्रकार सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी - सिरपुर

धरोहर :-

भारत वर्ष के मध्य में स्थित छत्तीसगढ़ अंचल पुरातत्व एवं संस्कृति की दृष्टि से विशेष समृद्ध प्रदेश है। नवीन राज्य निर्माण के पूर्व यह मध्यप्रदेश का अंग था। इसमें रायपुर, बिलासपुर एवं बस्तर संभाग सम्मिलित हैं। छत्तीसगढ़ राज्य धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक तथा पुरातत्वीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की बानगी हमें महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय एवं अन्य संग्रहालयों में सुरक्षित पुरावशेषों एवं कला सामग्री के अवलोकन करने से प्राप्त हो है। हमारी भावी पीढ़ी भी अपनी गौरवमयी विरासत से परिचित हो सके, इस दृष्टि से भविष्य के लिए उनको सुरक्षित बनाये रखने के लिए राज्य शासन के द्वारा पुरातत्वीय दृष्टि से महत्वपूर्ण 58 स्मारक राज्य संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है। ये स्मारक/स्थल हमारे गौरवपूर्ण अतीत के साक्ष्य हैं।

भोरमदेव मंदिर - कबीरधाम

ग्रंथालय :-

संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय को राज्य स्तरीय ग्रंथालय का दर्जा दिया गया है। ग्रंथालय में ई-लाईब्रेरी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस ग्रंथालय में इतिहास, पुरातत्व, नृतत्व शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, पर्यटन एवं कम्प्यूटर आदि के अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य से संबंधित ग्रंथ तथा गज़ेटियर उपलब्ध हैं। ग्रंथालय में प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र-छात्राओं के अध्ययन हेतु पृथक से अध्ययन कक्ष की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। ग्रंथालय का आधुनिकीकरण कर राष्ट्रीय पुस्तकालय स्तर का बनाया जा रहा है जिसके अंतर्गत लिब्सिस सॉफ्टवेयर कंपनी, कलकत्ता से सम्पर्क कर पुस्तकालय में सॉफ्टवेयर लगवाने का कार्य प्रथम चरण पर क्रियान्वित है जिससे पाठकों को पुस्तकें पढ़ने, ढूढने में विशेष सहायता मिल सकेगी।

सर्वेश्वर दास ग्रंथालय, रायपुर

अनुरक्षण कार्य :-

राज्य संरक्षित स्मारक स्थलों की सुरक्षा, सुदृढ़ता तथा संवर्धनात्मक कार्यों के अंतर्गत शिव मंदिर (गढ़धनोरा, बस्तर), शिव मंदिर (पलारी, दुर्ग), फणिकेश्वरनाथ मंदिर, (फिंगेश्वर, रायपुर), सिरपुर के अंदर चौकीदारों के क्वाटर्स का निर्माण कार्य, शिव मंदिर समूह (कलचा भदवाही), जिला सरगुजा में बाउण्ड्रीवाल का कार्य, शिवमंदिर हर्राटोला, बेलसर, जिला सरगुजा में बाउण्ड्रीवाल एवं एप्रोच का कार्य, सूर्य मंदिर, बोरजाटीला, डीपाडीह में बाउण्ड्रीवाल एवं अनुरक्षण का कार्य प्रगति पर है।

रासायनिक संरक्षण -

राज्य संरक्षित स्मारक के अंतर्गत डीपाडीह, जिला सरगुजा में सामत-सरना तथा उरांव टोला समूह में स्थित स्मारकों एवं पुरावशेषों का रासायनिक संरक्षण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। देवरानी-जेठानी मंदिर, ताला, जिला बिलासपुर, जगन्नाथ मंदिर, खल्लारी, जिला महासमुन्द, भोरमदेव मंदिर परिसर में स्थित प्राचीन ईंट निर्मित मंदिर तथा पाषाण प्रतिमा, सिरपुर, जिला महासमुन्द स्थित आनंदप्रभु कुटी विहार एवं स्वास्तिक विहार, शिवमंदिर, हर्राटोला, बेलसर, सतमहला मंदिर समूह, कलचा भदवाही, जिला सरगुजा, ईंट निर्मित मंदिर, नवागांव, जिला रायपुर तथा शिवमंदिर, घटियारी, जिला राजनांदगांव का रासायनिक संरक्षण कार्य प्रगति पर है।

राज्य की संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु संस्कृति नीति के अनुरूप सांस्कृतिक गतिविधियों को आयाम प्रदान किया जा रहा है। इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ के विभिन्न समुदायों के सांस्कृतिक विकास के लिए कला एवं जीवन, मौखिक एवं लिखित परम्परा के बीच में अन्तर्संबंध की पहचान, उनके अभिलेखन, प्रदर्शन, प्रकाशन एवं प्रचार करने का प्रयास किया गया है तथा समुदायों के बीच प्रचलित संस्कृति को प्रोत्साहित करने एवं उसे विकसित करने में राज्य के संस्कृति विभाग द्वारा एक उत्प्रेरक की भूमिका का सफल निर्वहन किया जा रहा है। तद्नुसार विभागीय योजनान्तर्गत छत्तीसगढ़ अंचल के लोक पारंपरिक उत्सवों, साहित्यिक आयोजनों एवं संगोष्ठियों हेतु चालू वित्तीय वर्ष में कुल 56 अशासकीय संस्थाओं को अनुदान राशि रू. 64,38,516/- तथा कुल 54 ख्यातिप्राप्त अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को मासिक आर्थिक सहायता राशि रू. 8,46,000/- तथा साहित्यकार एवं कलाकार की लम्बी बीमारी दुर्घटना या दैवी विपत्ति में तत्काल सहायता प्रदान करने के उद्धेश्य से संचालित योजनान्तर्गत कलाकार कल्याण कोष से कुल 07 हितग्राहियों को राशि रू. 1,05,000/- प्रदान किये गये हैं।

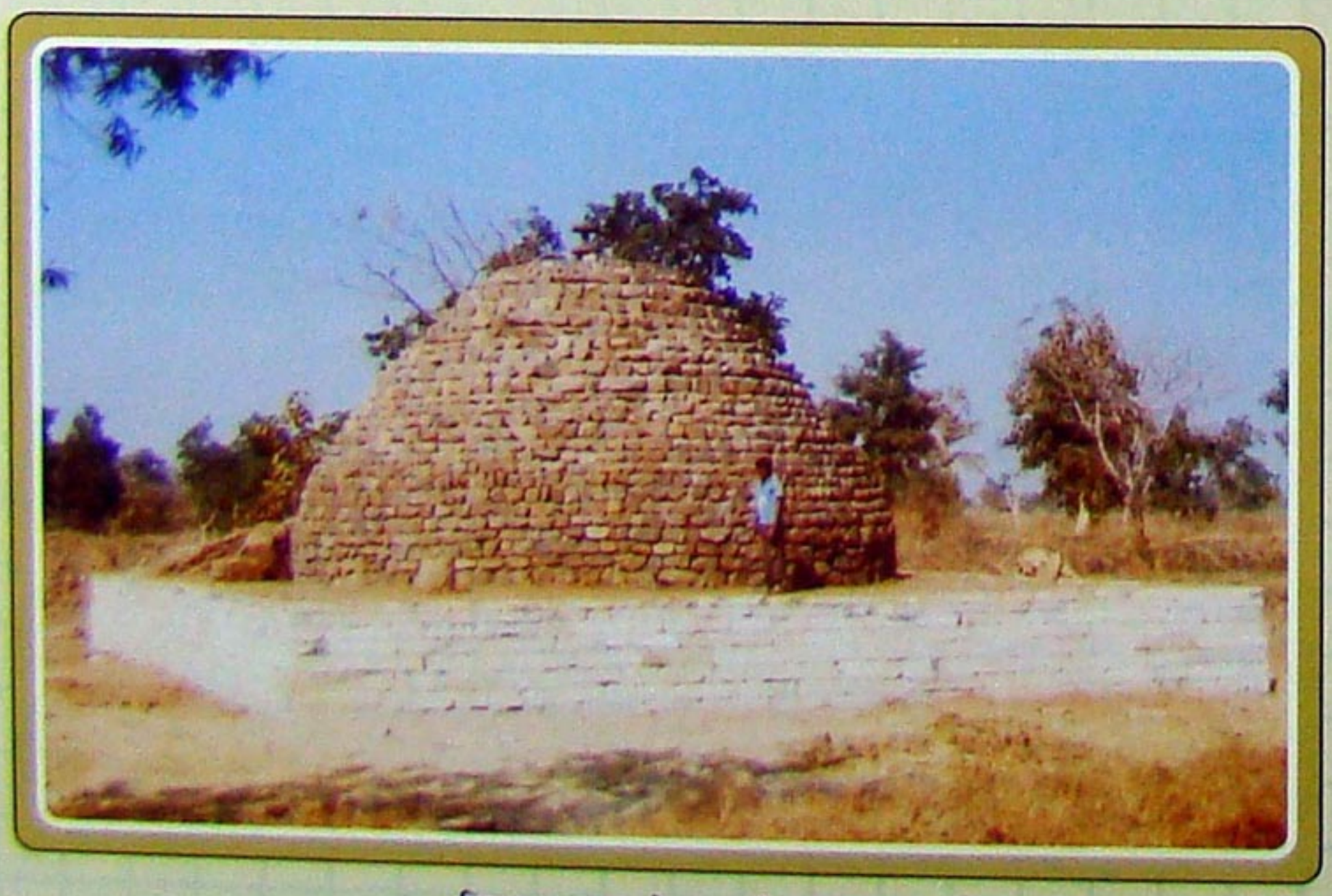

सिरपुर उत्खनन से प्राप्त बौद्ध स्तूप

पुरातत्वीय उत्खनन

विभाग को भारत सरकार से तीन स्थलों के उत्खनन हेतु अनुमति प्राप्त हुई है, जिसके अनुसार पचराही, जिला कबीरधाम, महेशपुर, जिला सरगुजा एवं सिरपुर, जिला महासमुंद में उत्खनन का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

सिरपुर :- उत्खनन से 79 कांस्य प्रतिमाएं, सिरपुर के सोमवंशी शासक तीवरदेव का 01 एवं महाशिवगुप्त बालार्जुन के 03 ताम्रपत्र सेट प्राप्त हुए हैं। अब तक सिरपुर में 32 प्राचीन टीलों पर प्राचीन संरचनाएं उत्खनन से प्रकाश में आए हैं। उत्खनन में पहली बार सिरपुर में मौर्य कालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुआ है। उत्खनन के साथ-साथ अनावृत्त संरचनाओं पर अनुरक्षण कार्य भी करवाया जा रहा है। सिरपुर में अनुरक्षण एवं विकास के कार्य कराए जा रहे हैं।

सिरपुर उत्खनन से प्राप्त राजप्रसाद

पचराही :- उत्खनन से प्राचीन मुद्राएं, पाषाण प्रतिमाएं एवं प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष प्रकाश में आये हैं। उत्खनन के दौरान प्रागैतिहासिक काल, कल्चुरी काल, फणिनागवंश तथा मुगल काल के प्रमुख अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस उत्खनन में छत्तीसगढ़ में पहली बार कवर्धा के फणी नागवंश का 01 स्वर्ण एवं 03 रजत मुद्रा प्रकाश में आए हैं, जिससे छत्तीसगढ़ के राजनैतिक इतिहास को एक नई दिशा मिली है। इसके अतिरिक्त कल्चुरि राजा जाजल्यदेव तथा मुगलकालीन 12 ताम्र मुद्राएं प्रकाश में आई है। उत्खनन से ज्ञात होता है कि पचराही प्रागैतिहासिक काल से लेकर मुगल काल तक सतत् रूप से मानव जाति का विचरण स्थली रहा है। मुख्यमंत्रीजी ने विशेष रूचि लेकर पचराही प्रवास के दौरान उत्खनन कार्य के संदर्भ में विभाग के प्रयासों और उपलब्धियों को रेखांकित कराया है।

पचराही उत्खनन - अवलोकन

महेशपुर :- उत्खनन से लगभग 7वीं सदी ईसवीं के सोमवंशी कला शैली के ईंटों से निर्मित ताराकृति तल योजना युक्त शिव मंदिर की संरचना ज्ञात हुई है। दक्षिण कोसल के सोमवंशी कला शैली के ताराकृति तलयोजना युक्त मंदिरों में यह विशाल है। परिसर में अन्य 04 लघु शिवमंदिर भी अनावृत्त किये गए हैं। यहां से प्रमुख रूप से स्थापत्य खंड, कृष्ण कथा तथा अन्य प्रतिमाओं के कलात्मक शिल्प प्रकाश में आए हैं। भग्न अभिलेख का एक अंश भी प्राप्त हुआ है। प्राप्त अवशेषों में ब्रिटिश कालीन 33 ताम्र मुद्राएं भी सम्मिलित हैं।

बिलासपुर जिले में शिवनाथ नदी के मध्य स्थित मदकूदीप में उत्खनन कार्य तथा रायपुर जिले में खारून नदी के किनारे तरीघाट के टीलों में पुरातत्वीय तकनीकी सर्वेक्षण कार्य हेतु अनुमति प्राप्त हो गई है। इन कार्यों से राज्य की पुरातत्वीय संपदा और प्राचीन इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों की प्रबल संभावना है।

उत्खनन से प्राप्त मूर्तियां - महेशपुर

बजट

संस्कृति विभाग का वर्ष 2000-2001 में छत्तीसगढ़ के गठन के समय बजट मात्र 23.64 लाख रूपये (आयोजना) था, जो 2003-2004 में बढ़कर 402.80 लाख रूपये हुआ तथा वर्ष 2010-2011 में 663.40 लाख रूपये हो गया, जो कि बजट में उत्तरोत्तर वृद्धि को दर्शा रहा है।

तुलनात्मक रूप से क्रमश: वर्षवार बजट का विवरण निम्नानुसार है :-

वर्ष		वित्तीय प्रावधान	स्वीकृत राशि/व्यय
2000-2001	आयोजना	रू. 23.64 लाख	रू. 13.63 लाख
	आयोजनेत्तर	रू. 59.59 लाख	रू. 41.72 लाख
2003-2004	आयोजना	रू. 402.80 लाख	रू. 267.39 लाख
	आयोजनेत्तर	रू. 218.65 लाख	रू. 173.25 लाख
2010-2011	आयोजना	रू. 663.4 लाख	रू. 127.22 लाख
	आयोजनेत्तर	रू. 856.71 लाख	रू. 201.18 लाख

राजिम कुम्भ मेला आयोजन

छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग का उद्घाटन समारोह

छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस, नई दिल्ली

महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लोक कलाकारों का उत्साहवर्धन

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ आयोजन

महंत घासीदास संग्रहालय स्थित आर्ट गैलेरी, रायपुर

बाल फिल्म समारोह में प्रदर्शित बाल फिल्म

स्वर परीक्षण आयोजन

स्वतंत्रता दिवस 2010 - विविध सांस्कृतिक आयोजन

प्रसिद्ध पंथी लोकनृत्य

प्रसिद्ध सरहुल लोकनृत्य

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

कला एवं संस्कृति से सम्पन्न
पृष्ठभूमि पर विकास यात्रा के
दशकीय पड़ाव पर स्थापित
विश्वसनीय छत्तीसगढ़ में
आप सभी सहभागी हैं ।

10वें वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं।

बृजमोहन अग्रवाल
संस्कृति मंत्री,
छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

राज्योत्सव 2010 - शुभारंभ समारोह

राज्योत्सव 2010 - कलाकार के.के. का सम्मान